भगत नामदेव - सबद २८

भैरउ भूत सीतला धावै ॥

रागु गोंड, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ८७४

भैरउ भूत सीतला धावै ॥
खर बाहनु उहु छारु उडावै ॥१॥
हउ तउ एकु रमईआ लैहउ ॥
आन देव बदलावनि दैहउ ॥१॥ रहाउ ॥
सिव सिव करते जो नरु धिआवै ॥
बरद चढे डउरू ढमकावै ॥२॥
महा माई की पूजा करै ॥
नर सै नारि होइ अउतरै ॥३॥
तू कहीअत ही आदि भवानी ॥
मुकति की बरीआ कहा छपानी ॥४॥
गुरमति राम नाम गहु मीता ॥
प्रणवै नामा इउ कहै गीता ॥५॥२॥६॥

सार: भय और उम्मीद पर निर्भर रहने से हम अपने असली स्वरूप से दूर हो जाते हैं जिससे तुलना और आंतरिक अशांति उत्पन्न होती है। दूसरों का दबाव और हमारे अपने डर, हमारे भीतर की समझ या विवेक से शायद ही कभी मेल खाते हैं। इन मांगों को पूरा करने की कोशिश करने से स्पष्टता के बजाय भ्रम पैदा होता है, यह ऐसा है जैसे, किसी साफ़ रोशनी के बजाय, अस्थिर परछाइयों के सहारे रास्ता खोजना। जब हम इस तरह से जीते हैं तब हम अपनी सच्ची समझ पर विचार करने के बजाय, बाहरी शोर-शराबे पर प्रतिक्रिया देने लगते हैं। असली स्पष्टता तब आती है जब हम इन दबावों को केवल क्षणभंगुर विचार मानते हैं, न कि अपने अस्तित्व की बुनियाद।

भैरउ भूत सीतला धावै ॥

जो लोग, भैरव जो संरक्षण की शक्ति का प्रतीक हैं, भूत जो अदृश्य शक्तियों का प्रतीक हैं और शीतला जो उपचार करने वाली देवी का प्रतीक हैं, उनकी खोज में भटकते हैं। यह उस भयभीत मन की प्रवृत्ति को दर्शाता है जो हमें सशक्त बनाने वाली आंतरिक शक्ति और दृढ़ता को अपनाने के बजाय सुरक्षा के बाहरी प्रतीकों का पीछा करती है।

खर बाहनु उहु छारु उडावै ॥१॥

गधे पर सवार होकर केवल धूल उड़ाना। यह चित्र दर्शाता है कि आलोचनात्मक सोच के बिना आस्था झूठी उम्मीदें पैदा करती है और स्पष्टता के बजाय अराजकता फैलाती है। (१)

हउ तउ एकु रमईआ लैहउ ॥

मैं केवल उसी सर्वव्यापी ऊर्जा को ही थामे रहूँगा। यह एकाग्र ध्यान और अपने एकीकृत स्वरूप के प्रति अटूट निष्ठा का प्रतीक है।

आन देव बदलावनि दैहउ ॥१॥ रहाउ ॥

मैं इसे किसी भी अन्य पूजनीय सत्ता के बदले नहीं बदलूँगा। यह निर्णय उस प्रलोभन को पूर्णतः अस्वीकार करता है जिसमें अनंत पूर्णता को सतही शक्तियों और आशा-भय से जुड़े क्षणभंगुर पदार्थों के बदले बदलने की चाह होती है। (१)(विराम)

सिव सिव करते जो नरु धिआवै ॥

'शिव, शिव' नाम का जाप करना जो विनाशकारी ऊर्जा और रूपांतरण का प्रतीक है और इस प्रकार का ध्यान करने वाले लोग। यह केवल कर्मकांडी दोहराव और आध्यात्मिकता के बाहरी रूपों में ही फँसे रहने की ओर संकेत करता है।

बरद चढे डउरू ढमकावै ॥२॥

बैल की सवारी करना और डमरू बजाना। यह अज्ञानता का प्रतीक है जो आध्यात्मिकता को आंतरिक मौन के बजाय बाहरी प्रदर्शन से जोड़ता है। (२)

महा माई की पूजा करै ॥

जो लोग महामाई, अर्थात् माया के स्रोत की पूजा करते हैं। यह पौराणिक देवी उस भ्रममयी शक्ति का प्रतीक है जो भौतिक संसार को वास्तविक प्रतीत कराती है और साथ ही उसमें इसे माया के रूप में प्रकट करने की शक्ति भी निहित है।

नर सै नारि होइ अउतरै ॥३॥

वह पुरुष और स्त्री दोनों रूपों में प्रकट होते हैं। यह एकत्व में द्वैत के प्रभाव की ओर संकेत करता है। हम पुरुष और स्त्री को अलग पहचानों के रूप में देखते हैं जबकि दोनों का मूल स्रोत एक ही है। (३)

तू कहीअत ही आदि भवानी ॥

तुम्हें आदि भवानी यानी जीवन का मूल स्रोत कहा जाता है। यह पौराणिक देवी हमारे अंतर्निहित गुणों का प्रतीक है, उस पालन-पोषण करने वाली ऊर्जा का, जो हमारे आध्यात्मिक विकास को पोषण देती है।

मुकति की बरीआ कहा छपानी ॥४॥

मुक्ति का क्षण कहाँ छिपा दिया गया है। यह प्रश्न साधक की उस यात्रा को दर्शाता है जिसमें वह अस्तित्व के भ्रमों से ऊपर उठने का मार्ग समझना चाहता है। (४)

गुरमति राम नाम गहु मीता ॥

आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि से प्राप्त बुद्धि के माध्यम से, उस सर्वव्यापी एकता का चिंतन करने का अभ्यास करो, प्यारे साथियों। यह बल देता है कि अपनी अंतरात्मा के मार्गदर्शन पर भरोसा करना ही उस एकत्व की वास्तविकता का अनुभव करने का सबसे प्रामाणिक मार्ग है।

प्रणवै नामा इउ कहै गीता ॥५॥२॥६॥

नामदेव विनम्रतापूर्वक कहते हैं कि पवित्र ग्रंथ, गीता भी यही उपदेश देती है। यह पुष्टि करता है कि उस सर्वव्यापी एकता का बोध ही परम आध्यात्मिक ज्ञान है। (५)(२)(६)

तत्त्व: भक्त नामदेव बताते हैं कि मन कितनी आसानी से रीति-रिवाजों और प्रतीकों से मोहित हो जाता है जो आगे चलकर निर्भरता का आधार बन सकते हैं। यह आकर्षण अक्सर अज्ञानता के कारण उत्पन्न होता है क्योंकि लोग प्रतीकों के अभ्यास को ही रूपांतरण का माध्यम मान बैठते हैं। भक्त नामदेव इस मानसिकता को चुनौती देते हुए पूछते हैं कि क्या यह रीति-रिवाज वास्तव में मुक्ति दिलाते हैं। सच्ची स्वतंत्रता के लिए ज्ञान के माध्यम से एकता के प्रति एक गहन और अधिक अंतर्मुखी प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में, बाहरी रूपों की बेचैन खोज शांत होने लगती है जिससे सच्ची आध्यात्मिक प्रज्ञा की प्राप्ति होती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com